❍ 17 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗"भगवान आकर माया से हमारी रक्षा करते हैं" - इसी ख़ुशी में रहे ?∗

➢➢ ∗किसी भी बात में मूंझे तो नहीं ?∗

➢➢ ∗चित्र को न देख चैतन्य और चरित्र को देखा ?∗

➢➢ ∗परमात्म प्यार में समाये रहे ?∗

────────────────────────

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ∗जो भी आत्मायें वाणी द्वारा व प्रैक्टिकल लाईफ के प्रभाव द्वारा सम्पर्क में आई हैं, वा सम्पर्क में आने के उम्मींदवार हैं, उन आत्माओं को रुहानी शक्ति का अनुभव कराओ।∗ जैसे भक्त लोग स्थूल भोजन का व्रत रखते हैं, तो सर्विसएबल ज्ञानी तू आत्माओं को व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म की हलचल से परे एकाग्रता अर्थात् रुहानियत में रहने का व्रत लेना है तब आत्माओं को ज्ञान सूर्य का चमत्कार दिखा सकोगें।

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं भगवान के साथ पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूँ"*

〰✧ *कितने भाग्यवान हो जो भगवान के साथ पिकनिक कर रहे हो! ऐसा कब सोचा था - कि ऐसा दिन भी आयेगा जो साकार रूप में भगवान के साथ खायेंगे, खेलेंगे, हंसेंगे... यह सवप्न में भी नहीं आ सकता लेकिन इतना श्रेष्ठ भाग्य है जो साकार में अनुभव कर रहे हो।*

〰✧ *कितनी श्रेष्ठ तकदीर की लकीर है - जो सर्व प्राप्ति सम्पन्न हो। वैसे जब किसी को तकदीर दिखाते हैं तो कहेंगे इसके पास पुत्र है, धन है, आयु है लेकिन थोड़ी छोटी आयु है... कुछ होगा कुछ नहीं। लेकिन आपके तकदीर की लकीर कितनी लम्बी है।*

〰✧ 21 जन्म तक सर्व प्राप्तियो के तकदीर की लकीर है। 21 जन्म गेरेंटी है और बाद में भी इतना दुख नहीं होगा। सारे कल्प का पौना हिस्सा तो सुख ही प्राप्त होता है। *इस लास्ट जन्म में भी अति दुखी की लिस्ट में नहीं हो। तो कितने श्रेष्ठ तकदीरवान हुए! इसी श्रेष्ठ तकदीर को देख सदा हर्षित रहो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ तो 5 ही रूप याद आ गये?

अच्छा एक सेकण्ड में यह 5 ही रूपों में अपने को अनुभव कर सकते हो? वन, टू, त्री, फोर, फाइव तो कर सकते हो! यह 5 ही स्वरूप कितने प्यारे हैं?

〰✧ *जब चाहे, जिस भी रूप में स्थित होने चाहो, सोचा और अनुभव किया। यही रूहानी मन की एक्सरसाइज है।* आजकल सभी क्या करते हैं? एक्सरसाइज करते हैं ना। जैसे आदि में भी आपकी दुनिया में (सतयुग में) नेचुरल चलते-फिरते की एक्सरसाइज थी

〰✧ खडे होकर के वन, टु, थ्री एक्सरसाइज नहीं तो *अभी अंत में भी बापदादा मन की एक्सरसाइज कराते हैं।* जैसे स्थूल एक्सरसाइज से तन भी दुरुस्त रहता है ना! तो *चलते-फिरते यह मन की एक्सरसाइज करते रहो। इसके लिए टाइम चाहिए।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अव्यक्त स्थिति में महान बनने के लिए एक बात जो कहते रहते हैं - वह धारण कर ली तो बहुत जल्दी और सहज अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जायेंगे। वह कौन-सी बात? अभी मेहमान हैं।* क्योंकि आप सभी को भी वाया सूक्ष्मवतन होकर घर चलना है। *हम मेहमान हैं - ऐसा समझने से महान स्थिति में स्तिथ रहेंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- प्यार से मुरली सुनना और सुनाना"*

➳ _ ➳ *मुरली की तान पर थिरकता ये मधुबन सारा... मैं दीवानी मुरली की, मुरली मेरे प्राणों का सहारा*... अन्तर्मन के पट खुले ये पहेली अब समझ में आई है... *मरली की खातिर भक्ति में जिन गोपियो ने सधबध बिसराई, वो

मुरली और वो गोपियाँ मैने आज खुद में ही पाई है*... क्षुद्र जन्म से ये श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म, खुदा जब खुद हर रोज प्रेमपाति भेज रहा है... किस कदर मन के मैल धुल गये है वो सम्मुख बैठ देख रहा है और *मेरे सम्मुख बैठे है बापदादा... और मैं मंन्त्रमुग्ध सी बस सुन रही हूँ और समाँ रही हूँ श्रेष्ठ पद का आधार एक एक महावाक्य को ...बडी तल्लीनता के साथ*...

❇ *श्रेष्ठ पद की प्राप्ति का ज्ञान और रुहानी पालना से भरपूर करने वाले बापदादा मुझ आत्मा से बोले:-* "मेरी चक्रधारी बच्ची... *ये प्रेम पाँति सर्वश्रेष्ठ पद का आधार है... एक एक महावाक्य में प्राप्तियों की लम्बी कतार है... एक एक महावाक्य अन्तर में समाँ लो... मनन चिन्तन से उसे धारणा अपनी बना लो*... क्या विधि की सिद्धि का ये राज आपको मालूम है... *पदमापदम भाग्यशाली बन गये हो आप क्या ये नशा सदा रहता है...?"*

➳ _ ➳ *ईश्वरीय मस्ती में मस्त मै देही विदेही बाप से बोली:-* "मीठे बाबा... *सदा एकव्रता बन तीनो लोको की सैर कराती है ये मुरली, सूक्ष्म वतन में कभी तो कभी देवताई झलक दिखाती है ये मुरली*... आपके संग संग फरिश्ता बन उड जाती हूँ मैं... जमाने भर की खुशियाँ मुट्ठी मे समेट लाती हूँ... संगम पर ये ऊँच ते ऊँच ब्राह्मण जन्म पाया है... *मुझ सा भाग्य किसका होगा... मुझे स्वराज्य अधिकारी बनना यही पर सिखलाया है...*"

❇ *अव्यक्त वतनवासी बाप मुझ साक्षात्कार मूर्त आत्मा से बोले:-* "मीठी बच्ची... *जैसे पाँच तत्वों के शरीर में बिन्दु बन रहती हो... वैसे ही अब लाइट के कार्ब में रहों... फरिश्ता बन धरा पर सेवार्थ कदम रखों ...* कारोबार पूरा कर फिर उपराम हो जाओ... अपने लाइट रूप से सबको साक्षात्कार कराओं... मुरली का स्वरूप बन विधि की सिद्धि सबको सिखाओं... *ज्वाला स्वरूप बन योग अग्नि से हर आत्मा को विकारों के बंधन से मुक्त कराओं"...*

➳ _ ➳ *स्वविकारों पर पैनी नजर रख उन्हें समाप्त करने वाली मैं मायाजीत आत्मा भोलेनाथ बाबा से बोली:-* "मेरे बाबा... *विकारों से अशान्त आत्माओं पर मैं फरिश्ता शान्ति की बदली बरसा रही हूँ... ज्ञान के खजानों से भरने सबको ज्ञान मरली का वर्सा दिला रही हूँ*... लास्ट सो फास्ट जाने का

तरीका श्रीमत पर ही सबको बता रही हूँ... बेफ्रिक बादशाह बनाया मुझे मुरली ने कैसे... अनुभव अपना मैं सबको बता रही हूँ..."

❇ *सच्चे सच्चे सेवाधारी बाप मुझ ज्ञानमूर्त आत्मा से बोले:-* "मेरी बच्ची... *अज्ञान और भक्ति के घने बीहड में काठ की मुरली और मुरली धर को अभी भी जो आत्माए खोज रही है उनको सदगुरू की सच्ची-सच्ची ज्ञान मुरली का रसपान कराओं*... मुरली से श्रेष्ठपद की प्राप्ति का अनुभव कराओं... मुरली को समालेना और स्वरूप बन जाने की विधि सिखाओं... अब अन्तिम समय का अन्तिम पुरूषार्थ और मायाजीत का अनुभव कराओं"...

➳ _ ➳ *सर्व खजानों से सम्पन्न धारणामूर्त मैं आत्मा बापदादा से बोली:-* "प्यारे बाबा... *मै तो निमित्त मात्र हूँ बाबा... ये ज्ञान मुरली ही सब करा रही है... महापरिवर्तन की वेला का आधार ये मुरली ही बनी है बाबा... जो पल मे तीनो लोको का भ्रमण करा देती है*... फरिश्ता बनाकर मुझे पल में दुआओं का कारोबार कराती है... मूढ पतित आत्माओं को पावन बना रही है... मेरे दैवी रूप का दीदार कराती है... प्रभु मिलन को बेताब आत्माओं को आपसे मिला देती है... *और कहते कहते मैं बीजरूप बन समाँ गयी हूँ मै बापदादा की गोद में..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सपूत बच्चा बन बाप का पूरा - पूरा मददगार बनना है*"

➳ _ ➳ अपने प्यारे परम पिता परमात्मा का सपूत बच्चा बन उनकी आज्ञानुसार, उनके फरमान का पालन करते हुए, अपने मन औऱ बुद्धि को याद की उस खूबसूरत रूहानी यात्रा पर मैं ले चलती हूँ, जो यात्रा जन्म जन्मांतर के पापों को भस्म कर, मुझे भविष्य 21 जन्मों के लिए अपरमअपार सुख देने वाली है। *चित को चैन देने वाली और मन को अमन कर देने वाली याद की उस यात्रा पर चलने के लिए मैं नश्वर संसार की हर बात से किनारा कर. हर

संकल्प, विकल्प से अपने मन बुद्धि को हटाकर अपने ध्यान को एकाग्र करती हूँ* और अपनी सभी कर्मेन्द्रियों से चेतनता को समेट कर, मस्तक के बिल्कुल सेन्टर पर स्थित कर लेती हूँ।

➳ _ ➳ एकाग्रता की शक्ति द्वारा, अपने वास्तविक स्वरूप को ज्ञान के दिव्य चक्षु से निहारते हुए, अपने अंदर समाये गुणों और शक्तियों का आनन्द लेते हुए, याद की इस खूबसूरत यात्रा पर अब मैं धीरे - धीरे आगे बढ़ती हूँ। *एक चैतन्य सितारे के रूप में स्वयं को भृकुटि के भव्यभाल पर चमकता हुआ मैं देख रही हूँ जो अपने गुणों और शक्तियों की किरणें चारों और फैलाता हुआ धीरे - धीरे भृकुटि सिहांसन को छोड़, देह रूपी गुफा से बाहर आ रहा है*। अपनी सम्पूर्ण निराकारी स्थिति में अब मैं स्वयं को देह से बिल्कुल न्यारा देख रही हूँ। मेरा यह सतोगुणी स्वरूप मुझे गहन सुखमय स्थिति का अनुभव करवा रहा है। *देह और देह की दुनिया के हर बन्धन, हर बोझ से मुक्त एकदम लाइट स्थिति में स्थित होकर अब मैं धीरे - धीरे ऊपर आकाश की ओर जा रही हूँ*।

➳ _ ➳ अपने गुणों और शक्तियों की रंग बिरंगी किरणो को चारों औऱ फैलाते हुए, याद की इस अति मनभावनी रूहानी यात्रा का आनन्द लेते हुए, मैं सारे विश्व का चक्कर लगाती हुई पहुँच जाती हूँ विशाल नीलगगन में। *सूर्य, चाँद, तारागणों के इस मांडवे को देखते - देखते इस विशाल नीलगगन को पार कर अब मैं इससे और आगे की यात्रा पर चलते हुए, सूक्ष्म लोक को पार करके, पहुँच जाती हूँ अपनी मंजिल अपने मूलवतन घर में*। साकारी और आकारी दोनों दुनियाओं से परें शान्ति की यह दुनिया जहाँ संकल्पों की भी हलचल नही, अपने इस मूलवतन घर में आकर याद की अपनी रूहानी यात्रा को मैं विराम देती हूँ और *इस यात्रा से मिलने वाले अतीन्द्रीय सुख के मधुर एहसास में डूब जाने के लिए, सुख के सागर अपने निराकार शिव पिता के पास पहुँचती हूँ*।

➳ _ ➳ सर्वगुणों, सर्वशक्तियों के सागर अपने प्यारे पिता को ज्योतिपुंज के रूप में अपने सामने मैं देख रही हूँ जो अपनी किरणों रूपी बाहों को फैलाये मेरा आह्वान कर रहें हैं। *अपना सम्पूर्ण ध्यान महाज्योति अपने शिव पिता पर केंद्रित कर, मन बदिध रूपी नेत्रों से उनके सन्दर स्वरूप को और उनसे निकल

रहे प्रकाश की एक - एक किरण को निहारते हुए मैं असीम आनन्द का अनुभव कर रही हूँ*। शक्तियों के सागर सर्वशक्तिवान मेरे शिव पिता की सर्वशक्तियों की अनन्त किरणें मुझ आत्मा के ऊपर पड़ रही हैं और मुझे गहन शीतलता की अनुभूति करवा रही हैं। *एक दिव्य अलौकिक आनन्द का अनुभव करते हुए, अतीन्द्रिय सुख के झूले में मैं झूल रही हूँ*।

➳ _ ➳ मेरे प्यारे पिता की सर्वशक्तियों की शक्तिशाली किरणें मेरे अंदर प्रवाहित हो कर मुझमे असीम बल भर रहीं हैं। स्वयं को मैं बहुत ही शक्तिशाली और तृप्त अनुभव कर रही हूँ। सुख, शांति के सागर अपने शिव पिता से मिल कर, उनसे शक्तियों की खुराक ले कर, असीम ऊर्जावान बन कर अब मैं वापिस साकारी दुनिया में लौट रही हूँ। *अपने साकारी तन में विराजमान हो कर, अपने शिव पिता की याद को सदा अपने हृदय में बसा कर अब मैं सदा स्मृति स्वरूप रहती हूँ। बाबा का सपूत बच्चा बन, बाबा की आज्ञा अनुसार निरन्तर बाप को याद करने का बाबा ने जो फरमान दिया है उसे पूरा करने के लिए, कर्मयोगी बन, मन बुद्धि से याद की यात्रा पर चलने का पुरुषार्थ अब मैं निरन्तर कर रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं ब्रह्मा बाप के संस्कारों को स्वयं में धारण करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं स्व परिवर्तक सो विश्व परिवर्तक आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

❋ *मैं आत्मा चित्र(देह) को देखने से सदैव मुक्त हूँ ।*
❋ *मैं आत्मा सदा चैतन्य और चरित्र को देखती हूँ ।*
❋ *मैं आत्मा सदैव अव्यक्त स्थिति बनाती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

❋ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा सभी बच्चों को बहुत सहज पुरुषार्थ की विधि सुना रहे हैं। माताओं को सहज चाहिए ना! तो बापदादा सब माताओं, बच्चों को कहते हैं, लेकिन *सबसे सहज पुरुषार्थ का साधन है - 'सिर्फ चलते-फिरते सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हर एक आत्मा को दिल से शुभ भावना की दुआयें दो और दूसरों से भी दुआयें लो'। चाहे आपको कोई कुछ भी दे, बददुआ भी दे लेकिन आप उस बददुआ को भी अपने शुभ भावना की शक्ति से दुआ में परिवर्तन कर दो।* आप द्वारा हर आत्मा को दुआ अनुभव हो। उस समय अनुभव करो जो बददुआ दे रहा है वह इस समय कोई-न-कोई विकार के वशीभूत है। *वशीभूत आत्मा के प्रति वा परवश आत्मा के प्रति कभी भी बददुआ नहीं निकलेगी। उसके प्रति सदा सहयोग देने की दुआ निकलेगी।*

➳ _ ➳ सिर्फ एक ही बात याद रखो कि *हमें निरन्तर एक ही कार्य करना है - 'संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, कर्मणा द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआ देना और दुआ लेना'।* अगर किसी आत्मा के प्रति कोई भी व्यर्थ वा निगेटिव संकल्प आवे भी तो यह याद रखो मेरा कर्तव्य क्या है! जैसे कहाँ आग लग रही हो तो आग बुझाने वाले होते हैं तो वह आग को देख जल डालने का अपना कार्य भूलते नहीं, उन्हों को याद रहता है कि हम जल डालने वाले हैं, आग

बुझाने वाले हैं, ऐसे अगर कोई भी विकार की आग वश कोई भी ऐसा कार्य करता है जो आपको अच्छा नहीं लगता है तो *आप अपना कर्तव्य याद रखो कि मेरा कर्तव्य क्या है - किसी भी प्रकार की आग बुझाने का, दुआ देने का। शुभ भावन की भावना का सहयोग देने का।* बस एक अक्षर याद रखो, माताओं को सहज एक शब्द याद रखना है - 'दुआ देना, दुआ लेना'।

✺ *ड्रिल :- "सबसे सहज पुरुषार्थ की विधि का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस देह में भ्रूकुटी के मध्य विराजमान हूँ... मैं इस देह से अलग हो फरिश्ता रूप में स्थित हो गयी हूँ... *मेरा ये लाइट का शरीर एक दम हल्का है... मैं आत्मा फरिश्ता रूप में कही भी पहुँच जाती हूँ... मैं फरिश्ता आबू तीरथ की यात्रा पे निकल पड़ी हूँ... यहाँ ऊंचे - ऊचे पहाड़ों से होते हुए, नाचते - गाते, झूमते हुए पहुँच जाती हूँ... बाबा की तपस्या भूमि पाण्डव भवन में...* सबसे पहले मैं फरिश्ता हिस्ट्री हॉल में जाता हूँ... यहाँ मैं *अपने सारे व्यर्थ और कमजोर संकल्प बाबा की झोली में डाल देती हूँ... बाबा मुझे दृष्टि दे रहे हैं... जिससे मेरे अशुद्ध और व्यर्थ विचार जल कर भस्म हो गए हैं...* मैं फरिश्ता सम्पूर्ण पवित्र बन गया हूँ... अब मैं शांति स्तंभ पे पहुंच कर बाप समान मास्टर शक्तिशाली बन गया हूँ... बाबा ने मुझे सर्व शक्तियों से भरपूर कर दिया है... *बाबा ने मेरा हाथ पकड़ के अपने कमरे में बिठा लिया और अपने समान निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी बना दिया...* अब मैं फरिश्ता उड़ कर पहुँच जाता हूँ... बाबा की झोपड़ी में जहाँ मैं बाबा से रूह - रिहान कर रही हूँ... *मेरे मन की जितनी भी उदासी, दुख और ग्लानि है सब निकल रही है... और आनंद और खुशी से भरपूर हो रही हूँ... मैं फरिश्ता बापदादा से सर्व शक्तियां लेकर कर सम्पूर्ण फरिश्ता बन गयी हूँ...*

➳ _ ➳ मैं फरिश्ता वापस अपने स्थान पर पहुँच जाता हूँ... *मैं फरिश्ता सहज पुरुषार्थी हूँ... चलते - फिरते और कर्म करते हुए निरंतर बाबा को याद कर रहा हूँ... मुझ फरिश्ते के सम्बन्ध-सम्पर्क में जो भी आत्मा आती है उन सब को दिल से शुभ भावना की दुआयें दे रही हूँ...* जिससे मुझे स्वतः दुआयें मिल रही है... चाहे मुझ आत्मा को कोई कुछ भी दे... बददुआ भी दे... *लेकिन मैं आत्मा उस आत्मा की बददआ को भी अपने शभ भावना की शक्ति से दआ

में परिवर्तन कर रही हूँ...* मुझ आत्मा द्वारा हर आत्मा को दुआ अनुभव हो रही है...

➳ _ ➳ जब भी मुझ आत्मा को कोई आत्मा भला बुरा बोलती है... उस समय मैं आत्मा अनुभव करती हूँ जो आत्मा बददुआ दे रही है वह इस समय कोई-न-कोई विकार के वशीभूत है... *मैं आत्मा बाबा के कहे अनुसार उस वशीभूत आत्मा के प्रति या परवश आत्मा के प्रति कभी भी बददुआ नहीं निकालती हूँ... उसके प्रति सदा सहयोग देने की दुआ ही निकाल रही हूँ... उसको शुभ भावना की बौछार देकर परिवर्तित कर रही हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदैव सिर्फ एक ही बात याद रखती हूँ कि... *मुझे निरन्तर सिर्फ बाबा की छत्र छाया में रहना है... जिसके अंदर में आत्मा सम्पूर्ण सुरक्षित हूँ... मैं आत्मा सिर्फ एक ही कार्य कर रही हूँ... संकल्प द्वारा... बोल द्वारा... कर्म द्वारा... सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा... दुआ दे रही हूँ और दुआ ले रही हूँ...* अगर किसी आत्मा के प्रति कोई भी व्यर्थ या निगेटिव संकल्प आता भी है तो उसे बाबा को समर्पित कर हल्का हो रही हूँ... मुझ आत्मा को हमेशा स्मृति रहती है... कि मेरा कर्तव्य है... लगी हुई आग को बुझाना... मैं आत्मा हमेशा याद रखती है कि मेरा कार्य जल डालने का है... और *मैं आत्मा अपना यही कार्य कर रही हूँ... विकारों की लगी हुई आग बुझा रही हूँ...*

➳ _ ➳ अगर कोई आत्मा विकार की आग वश होकर... कोई भी ऐसा कार्य करती है जो मुझ आत्मा को अच्छा नहीं लगता है... *तो मैं आत्मा ऐसी परवश आत्मा को शुभ भावना और दुआएँ देकर उसके विकारों की आग ठंडा कर रही हूँ...* उस आत्मा को शुभ भावना का सहयोग दे रही हूँ... जिससे वो स्वत: परिवर्तित हो रही है... *बाबा ने माताओं को सहज पुरुषार्थ करने के लिए एक शब्द याद रखने को कहा कि दुआ देना है... और दुआ लेना है... अब मैं आत्मा चलते - फिरते सिर्फ दुआ देने और लेने का ही काम कर रही हूँ... यही सहज पुरुषार्थ की विधि है...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔